Accredited with NAAC A Grade

12-B Status from UGC

PARAMPARA

Biannual E- Newsletter, Vol.3, January to June, 2026

CENTRE FOR
INDIAN KNOWLEDGE SYSTEM

Established on 24th May, 2023

TEERTHANKER MAHAVEER UNIVERSITY

Accredited with NAAC A Grade
12-B Status from UGC

CENTRE FOR INDIAN KNOWLEDGE SYSTEM IN 2025- PART II

From January 2026 to June 2026, the Centre for Indian Knowledge Systems actively promoted Indian wisdom traditions through a series of academic programmes, including three Online National Conclaves and one Offline National Conclave. These events brought together academicians, researchers, educationists, and professionals from across the country to deliberate on various aspects of Indian Knowledge Systems and their contemporary relevance. The highlight of this period was the two-day National Seminar on **"Karma Theory in Jain Tradition and its Relevance in Present Times,"** organized in collaboration with the Centre for Jain Studies. The seminar attracted eminent educationists, scholars, and industrialists from across the nation who shared valuable insights on the practical and philosophical dimensions of Karma Theory. The event proved to be highly enriching intellectually and served as an excellent platform for meaningful dialogue, interdisciplinary learning, and the dissemination of Indian Knowledge tradition.

Summary of the Events organized from July-December 2025

11th National Conclave
03/01/2026
01

12th National Conclave
28/01/2026
02

National Seminar
26-27th March, 2026
03

13th National Conclave
30/05/2026
04

14th National Conclave
20/06/2026
05

You cannot believe in God until you believe in yourself

Swami Vivekanand

Glimpses: 11th National Conclave on Integrating Ancient Indian Knowledge withModern Medicine to Stay Healthy, 25/07/2025

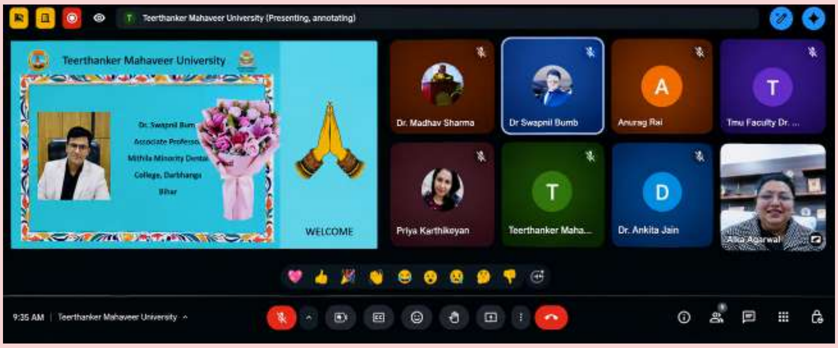

EMINENT SPEAKERS OF THE CONCLAVE

Dr. Anurag Rai, Professor & Head of Orthodontics at Government Patna Dental College

Dr. Swapnil Bumb, Associate Professor, Mithila Minority Dental College, Darbhanga, Bihar

तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी में प्राचीन भारतीय मौखिक स्वच्छता परंपराएं और आधुनिक दंत चिकित्सा में इसकी प्रासंगिकता पर 11वीं ऑनलाइन राष्ट्रीय संगोष्ठी

Dr. Priyadarshini Kartikeyan, Head of the Department at AIMST University, Malaysia

Dr. Ankita Jain, Vice Principal, TMDRC

Dr. Sivan Sathish, Professor and HOD Department of Oral Medicine and Radiology, TMDCRC

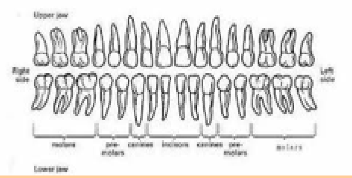

Human Teeth and Indian Knowledge System

चिकित्सा के संग-संग रीति-रिवाजों में हल्दी का उपयोग छह हजार बरस पुराना

Glimpses: 12th National Conclave on " Purpose, Passion, and Professional Life: Lessons from Shrimad Bhagwat Gita" Dated, 28/01/2026

EMINENT SPEAKERS OF THE CONCLAVE

Dr. Jagdish Prasad Kothari: Former professor of Sanskrit,He has also served as principal of Sanskrit Mahavidyalay in Moradabad itself. He is famously known as an astrologer, vyakaranachary and moreover a bhagwatacharya.

Arvindaksha Madhav Das: He is a dynamic youth mentor, leadership coach, and inspirational speaker, originally trained as an aeronautical engineer. Driven by a true desire toserve humanity and help othersfind their higher purpose, he has walked the path of sainthood with ISKCON.

Dr Upma Awasthi is an Ophthalmologist associated with Eye and Heart Care, Aashiyana, Moradabad. She is MBBS and MS Ophthalmology and a full time Krishna devotee

Shri Arunodaya Kirtan Das is a Krishna devotee, associated with ISKCON. Basically he is from Engineering background.

श्रीमद्भगवद्गीता धार्मिक ग्रंथ संग ही जीवन की मार्गदर्शिका भी

टीएमयू में राष्ट्रीय कान्क्लेव कार्यक्रम में उपस्थित व वक्ता। फोटीएमयू

जासं, मुरादाबाद : तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय में 12वीं राष्ट्रीय कान्स्लेव बुधवार को संपन्न हुआ। टिमिट कालेज आफ मैनेजमेंट के आडिटोरियम में आयोजित इस राष्ट्रीय स्तर के अकादमिक व वैचारिक कान्स्लेव का विषय उद्देश्य, अवसर और व्यावसायिक जीवन श्रीमद्भगवद्गीता से सीख रहा। आयोजन सेंटर फार इंडियन नालेज सिस्टम, टीएमयू के तत्वावधान में किया गया।

सेंटर की कोआर्डिनेटर डा. अलका अग्रवाल ने कहा कि श्रीमद्भगवद्गीता केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवन प्रबंधन, नेतृत्व, कर्मयोग और नैतिक मूल्यों की व्यावहारिक मार्गदर्शिका है। डीन एकेडेमिक्स डा. मंजुला जैन ने विश्वविद्यालय की प्रगति आख्या प्रस्तुत करते हुए कहा कि गीता का कर्मयोग युवाओं को परिणाम की चिंता किए बिना निरंतर प्रयास की प्रेरणा देता है। ज्योतिषाचार्य डा. जगदीश कोठारी ने श्लोकों के माध्यम से जीवन के उद्देश्य, आत्मज्ञान और निष्काम कर्म को समझाया। डा. उपमा अवस्थी ने मानसिक स्वास्थ्य, संतुलित जीवनशैली और आंतरिक शांति पर विचार रखे। यूथ मेंटर अरविंदाक्ष माधव दास ने कहा कि स्पष्ट उद्देश्य और आत्मअनुशासन के बिना सफलता अधूरी है। इस्कान में जुड़े अरुणोदय कीर्तन दास ने कर्म, भक्ति और सेवा भाव को व्यावसायिक जीवन से जोड़ने पर बल दिया। समापन पर कुलपति विनोद जैन ने आयोजन की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रम विद्यार्थियों के समय व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

टीएमयू में भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र द्वारा आयोजित 12वां राष्ट्रीय कॉन्क्लेव भव्यता के साथ संपन्न

मुरादाबाद: सागर और पद्मना स्कूल तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद द्वारा आयोजित 12वां राष्ट्रीय कॉन्क्लेव बुधवार को टिमिट- कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट के ऑडिटोरियम में गरिमामय वातावरण में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस राष्ट्रीय स्तर के अकादमिक एवं वैचारिक कॉन्क्लेव का विषय उद्देश्य, अवसर और व्यावसायिक जीवन-श्रीमद्भगवद्गीता से सीख रहा। कार्यक्रम का आयोजन सेंटर फॉर इंडियन नॉलेज सिस्टम, टीएमयू के तत्वावधान में किया गया, जिसमें देशभर से आए शिक्षाविदों, विषय विशेषज्ञों, विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों की उल्लेखनीय सहभागिता देखने को मिली। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ, जिससे पूरे सभागार में आध्यात्मिक और बौद्धिक ऊर्जा का संचार हुआ। इस अवसर पर सेंटर फॉर इंडियन नॉलेज सिस्टम की कोऑर्डिनेटर डॉ. अलका अग्रवाल ने अपने उद्बोधन में कहा कि श्रीमद्भगवद्गीता केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवन प्रबंधन, नेतृत्व, कर्मयोग और नैतिक मूल्यों की एक समग्र एवं व्यावहारिक मार्गदर्शिका है। डीन-एकेडमिक्स, टीएमयू डॉ. मंजुला जैन ने यूनिवर्सिटी की प्रगति आख्या प्रस्तुत करते हुए कहा कि गीता का कर्मयोग युवाओं को अपने लक्ष्य के प्रति निष्ठावान रहने, परिणाम की चिंता किए बिना निरंतर प्रयास करने की प्रेरणा देता है। कॉन्क्लेव के प्रमुख वक्ता डॉ. जगदीश कोठारी (भागवताचार्य एवं ज्योतिषाचार्य) ने गीता के चयनित श्लोकों के माध्यम से जीवन के उद्देश्य, आत्मज्ञान और निष्काम कर्म के महत्व को सरल, रोचक एवं प्रभावशाली ढंग में प्रस्तुत किया। डॉ. उपमा अवस्थी (सावन आई केयर हार्ट क्लिनिक मुरादाबाद) ने अपने संबोधन में मानसिक स्वास्थ्य, संतुलित [illegible]

... को संबोधित करते हुए कहा कि जुनून और स्पष्ट उद्देश्य के बिना सफलता अधूरी रहती है। उन्होंने गीता से जुड़े उदाहरणों के माध्यम से नेतृत्व क्षमता, आत्मअनुशासन और सकारात्मक निर्णय लेने की कला पर बल दिया तथा युवाओं को अपने लक्ष्य के प्रति एकाग्र प्रतिबद्ध रहने का संदेश दिया। वहीं श्री अरुणोदय कीर्तन दास (इस्कॉन) ने आध्यात्मिक दृष्टिकोण के द्वारा, भक्ति और सेवा भाव पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि जब व्यावसायिक जीवन में आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों का समावेश होता है, तो व्यक्ति न केवल व्यक्तिगत सफलता प्राप्त करता है, बल्कि समाज के लिए भी एक प्रेरणास्रोत बनता है। उन्होंने [illegible] इस प्रकार के राष्ट्रीय कॉन्क्लेव विद्यार्थियों में [illegible]

मंच संचालन डॉ. भावना शर्मा ने अत्यंत प्रभावशाली एवं सुव्यवस्थित ढंग से किया। कॉन्क्लेव के दौरान प्रश्नोत्तर सत्र का भी आयोजन किया गया, जिसमें छात्रों ने वक्ताओं से जीवन, करियर, नेतृत्व और मूल्य-आधारित निर्णय से संबंधित जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त किया। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। इस अवसर पर तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय के माननीय [illegible] श्री विनोद जैन जी ने कॉन्क्लेव की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए आयोजन के लिए आयोजकों को शुभकामनाएं दीं।

यह राष्ट्रीय कॉन्क्लेव निश्चय ही भारतीय ज्ञान प्रणाली को आधुनिक व्यावसायिक एवं जीवन संदर्भों से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण, विचारोत्तेजक एवं प्रेरक प्रयास [illegible]

Glimpses: Two days' National Seminar on 'Karma Theory in the Jain Tradition and Its Relevance in the Present Times' held on 26-27 March, 2026

EMINENT SPEAKERS OF THE NATIONAL SEMINAR

Experts/Speakers	Designation & Institution
Dr. Phoolchand Premi Jain	Former Professor, Sampoornanad Vishvavidyalaya, Varanasi
Dr. Indu Jain	Rashtra Gaurav & Expert Advisory Member, NMC, Delhi
Dr. V.K. Jain	Vice Chancellor, TMU
Dr. Anekant Jain	Professor, LBS University, New Delhi
Dr. Ramnath Jha	Professor, JNU, New Delhi
Dr. Rajmal Jain	Former Scientist, NASA & ISRO
Dr. Nalin K. Shastri	Former Registrar, Magadh University, Bodh Gaya
Dr. Shreyans Jain	Professor, JVBV, Ladnun, Rajasthan
Dr. Medhavi Jain	Founder, Dharma for Life, New Delhi
Dr. V.K. Jain	Director, B.L. Institute of Indology, New Delhi
Dr. Dinesh Chandra Shastri	Former Vice Chancellor, Uttarakhand Sanskrit University, Haridwar
Dr. Raka Jain	Professor, B.L. Institute of Indology, New Delhi
Dr. Puneet Jain	Software Development Engineer, Entain, Hyderabad
Dr. Karuna Jain	Director, Gunvrat Foundation, Bhopal
Dr. Vipin Jain	Director, Centre for Jain Studies, TMU
Dr. Archana Jain	Associate Professor, TMU
Dr. Vipin Jain	Centre for Jain Studies, TMU
Dr. Kalpana Jain	Centre for Jain Studies, TMU
Dr. Namrta Jain	Asst. Professor, TMU
Dr. Alka Agarwal	Coordinator, CIKS, TMU

Outcomes of the Seminar:

1. Deepened Understanding of Jain tradition and 'Karma' theory
2. Practical and Ethical awareness among the students
3. Promotion of Sustainability and Ethical Living
4. Networking and Collaborative Opportunities
5. Many research papers from the experts and Research scholars were received and were published as an edited book with ISBN for further enlightenment.

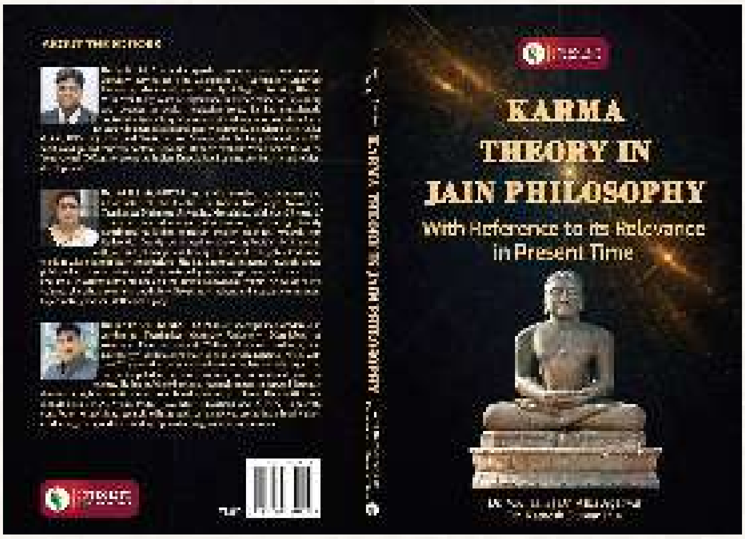

PICTURES OF THE EVENT

Media Coverage

प्रतिस्पर्धात्मक एवं तनावपूर्ण जीवन में कर्म सिद्धांत प्रासंगिक

जैन कर्म सिद्धांत की समकालीन प्रासंगिकता पर दो दिनी राष्ट्रीय संगोष्ठी में जुटे जैनोलॉजी के नामचीन मनीषी

प्रतिस्पर्धात्मक व तनावपूर्ण जीवन में कर्म सिद्धांत प्रासंगिक

भारतीय दार्शनिक परिषद की ओर से तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी के जैन अध्ययन केंद्र और भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र- आईकेएस के संयुक्त तत्वावधान में जैन कर्म सिद्धांत की समकालीन प्रासंगिकता पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में जुटे जैनोलॉजी के नामचीन मनीषी

Glimpses: 13th National Conclave on " Learning in Satyug: The Dawn of Truth-Based Education." 30/05/2026

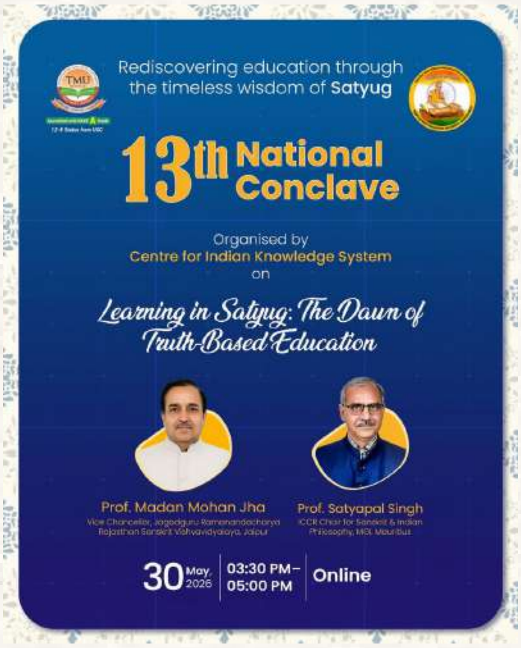

Prof. (Dr.) Madan Mohan Jha currently holds the distinguished position of Vice-Chancellor at the Jagadguru Ramanandacharya Rajasthan Sanskrit University, He is also recognized by the academic titles of VyakaranaAcharya, Shikshacharya, and Vidyavaridhi. Jaipur

Pro. Satyapal Singh, Senior Professor, Department of Sanskrit, University of Delhi, Delhi, Present Post: ICCR Chair of Sanskrit and IndianPhilosophy, MGI Mauritius Received Shastri degree from AAP Gurukul Jhajjar, Haryana

'संपूर्ण रामायण शिक्षा का जीवंत स्रोत': प्रो. मदन मोहन झा, टीएमयू में राष्ट्रीय ऑनलाइन कॉन्क्लेव आयोजित

शाह टाइम्स ब्यूरो

मुरादाबाद। तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी के भारतीय ज्ञान परम्परा केंद्र के तत्वावधान में सत्ययुग में शिक्षा: सत्य-आधारित शिक्षण का उदय विषय पर 13वां राष्ट्रीय ऑनलाइन कॉन्क्लेव आयोजित किया गया। कार्यक्रम में सत्ययुगीन शिक्षा व्यवस्था और भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न आयामों पर चर्चा हुई। मुख्य बातें रामायण शिक्षा का स्रोत: जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत यूनिवर्सिटी, जयपुर के कुलपति प्रो. मदन मोहन झा ने कहा कि संपूर्ण रामायण शिक्षा का जीवंत स्रोत है, जो मनुष्य को सत्य, मर्यादा, करुणा और लोक कल्याण का मार्ग दिखाती है। उन्होंने छांदोग्य उपनिषद में वर्णित सत्यकाम जाबाल के प्रसंग से सत्यनिष्ठा को भारतीय शिक्षा की आधारशिला बताया।शिक्षा का उद्देश्य: प्रो. झा ने कहा कि भारतीय शिक्षा परंपरा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि आत्मोन्नति, चरित्र निर्माण और पुरुषार्थ चतुष्टय: धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति है। शिक्षा का उद्देश्य प्रतिस्पर्धा नहीं, समाजोपयोगी और आदर्श नागरिक का निर्माण है।सत्य को अनेक दृष्टिकोणों से समझें: आईसीसीआर चेयर फॉर संस्कृत एंड इंडियन फिलॉसफी, एमजीआई, मॉरीशस के प्रो. सत्यपाल सिंह ने जैन दर्शन के सप्तभंगी सिद्धांत का उल्लेख करते हुए कहा कि सत्य को अनेक दृष्टिकोणों से समझने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा आचार्य केवल शिक्षक नहीं, बल्कि चरित्र और जीवन-दृष्टि के निर्माता होते हैं।चरित्र निर्माण पर जोर: टीएमयू के कुलपति प्रो. वीके जैन ने कहा कि रामायण, रामचरितमानस और श्रीमद्भगवद्गीता में शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, आत्मानुशासन और कर्तव्यबोध का साधन माना गया है। उन्होंने अनुभव-आधारित और परियोजना आधारित शिक्षण पद्धतियों की उपयोगिता पर बल दिया। टीएमयू आईकेएस सेंटर की कोऑर्डिनेटर डॉ. अलका अग्रवाल ने कहा कि वर्तमान समय में शिक्षा को केवल सूचना और कौशल तक सीमित न रखकर व्यक्तित्व और चरित्र निर्माण का माध्यम बनाया जाना चाहिए। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती की वंदना और दीप प्रज्ज्वलन से हुआ और समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ। संचालन डॉ. माधव शर्मा ने किया।

रामायण शिक्षा का जीवंत स्रोत: प्रो. मदन मोहन झा

रामायण शिक्षा का जीवंत स्रोत: प्रो. मदन मोहन झा

टीएमयू में सत्ययुग में शिक्षा: सत्य-आधारित शिक्षण का उदय पर 13वां राष्ट्रीय ऑनलाइन कॉन्क्लेव

रामायण शिक्षा का जीवंत स्रोत, सत्यनिष्ठा भारतीय शिक्षा की आधारशिला : प्रो. मदन मोहन झा

(उत्तर केसरी संवाददाता)

मुरादाबाद। तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी (टीएमयू) के भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र (आईकेएस) के तत्वावधान में सत्ययुग में शिक्षा - सत्य-आधारित शिक्षण का उदय विषय पर 13वें राष्ट्रीय ऑनलाइन कॉन्क्लेव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में भारतीय शिक्षा परंपरा, सत्य, नैतिकता और चरित्र निर्माण जैसे विषयों पर विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किए।

मुख्य वक्ता के रूप में संबोधित करते हुए जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर के कुलपति प्रो. मदन मोहन झा ने कहा कि संपूर्ण रामायण शिक्षा का जीवंत स्रोत है, जो मनुष्य को सत्य, मर्यादा, करुणा और लोककल्याण का मार्ग दिखाती है। उन्होंने छांदोग्य उपनिषद में वर्णित सत्यकाम जाबाल के प्रसंग का उल्लेख करते हुए सत्यनिष्ठा को भारतीय शिक्षा व्यवस्था की आधारशिला बताया।

प्रो. झा ने कहा कि भारतीय शिक्षा परंपरा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि आत्मोन्नति, चरित्र निर्माण तथा पुरुषार्थ चतुष्टय-धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष-की प्राप्ति है। उन्होंने गुरु-शिष्य परंपरा, गुरुकुल शिक्षा, योग, वेद, दर्शन और पुराणों की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि शिक्षा का लक्ष्य प्रतिस्पर्धा नहीं, बल्कि समाजोपयोगी एवं आदर्श नागरिक तैयार करना है।

कार्यक्रम में आईसीसीआर चेयर फॉर संस्कृत एंड इंडियन फिलॉसफी, मॉरीशस के प्रो. सत्यपाल सिंह ने भारतीय दर्शन और शिक्षा के दार्शनिक आयामों पर विचार रखते हुए कहा कि प्रभावी शिक्षा व्यवस्था के लिए सामाजिक विज्ञानों और शारीरिक श्रम का समन्वय आवश्यक है। उन्होंने न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदान्त, चार्वाक, जैन और बौद्ध दर्शन की चर्चा करते हुए भारतीय चिंतन की बौद्धिक विविधता और उदारता को रेखांकित किया।

प्रो. सत्यपाल सिंह ने जैन दर्शन के सप्तभंगी सिद्धांत का उल्लेख करते हुए कहा कि सत्य को विभिन्न दृष्टिकोणों से समझने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि आचार्य केवल शिक्षक नहीं होते, बल्कि वे चरित्र और जीवन-दृष्टि के निर्माता भी होते हैं।

टीएमयू के कुलपति प्रो. वी.के. जैन ने संत कबीर के प्रसिद्ध दोहे गुरु गोविन्द दोऊ खड़े... का उल्लेख करते हुए भारतीय संस्कृति में गुरु के सर्वोच्च स्थान को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि रामायण, रामचरितमानस और श्रीमद्भगवद्गीता शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, आत्मानुशासन और कर्तव्यबोध का सशक्त साधन मानती हैं।

प्रो. जैन ने जैन दर्शन में वर्णित कालचक्र की अवधारणा पर भी प्रकाश डाला तथा अनुभव-आधारित, परियोजना-आधारित, प्रशिक्षण-आधारित और इंटर्नशिप-आधारित शिक्षण पद्धतियों की उपयोगिता पर बल दिया।

आईकेएस सेंटर की समन्वयक डॉ. अलका अग्रवाल ने भारतीय ज्ञान परंपरा में सत्य, नैतिकता और मूल्यपरक शिक्षा के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि वर्तमान समय में शिक्षा को केवल सूचना और कौशल तक सीमित न रखकर व्यक्तित्व एवं चरित्र निर्माण का माध्यम बनाया जाना चाहिए।

कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती वंदना एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुआ तथा समापन राष्ट्रगान के साथ किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. माधव शर्मा ने किया।

Glimpses: 14th National Conclave on " Treta Yug: Rise of Dharmic Instruction and Rishi Ashramas" 20/06/2026

EMINENT SPEAKERS OF THE CONCLAVE

Prof. Upendra Kumar Tripathi HOD, Dept. of Veda & Coordinator, Centre for Vedic Sciences, Faculty of SVDV, BHU, Varanasi. He is well versed with languages like Hindi, English, Sanskrit, Bhojpuri. He has been awarded President's Award (Maharishi Badrayan Vyas Samman) by Govt. of India.

रामराज्य की अवधारणा आज भी प्रासंगीक: प्रो. उपेन्द्र

मुरादाबाद। तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी के भारतीय ज्ञान परम्परा- आईकेएस केंद्र के तत्वावधान में त्रेता युग : धर्माधारित शिक्षा एवम् ऋषि आश्रमों का उदय पर ऑनलाइन 14वीं राष्ट्रीय कॉन्क्लेव काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के सेंटर फॉर वैदिक साइंस में विभागाध्यक्ष एवम् संस्थापक- समन्वयक प्रो . उपेन्द्र कुमार त्रिपाठी ने कहा, वेद, उपनिषद, वेदांग, उपवेद, पुराण एवम् षड्दर्शन में निहित ज्ञान परम्परा ही भारतीय शिक्षा का मूल आधार है। उन्होंने तक्षशिला और पुष्कलावती जैसे प्राचीन शिक्षा केंद्रों, प्रश्नोपनिषद, शिक्षावल्ली, स्वाध्याय, श्रवण-मनन, गुरु-शिष्य परम्परा की महत्ता पर विस्तार से प्रकाश डाला। प्रो . त्रिपाठी तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी, मुरादाबाद के भारतीय ज्ञान परम्परा- आईकेएस केंद्र के तत्वावधान में त्रेता युग : धर्माधारित शिक्षा एवम् ऋषि आश्रमों का उदय पर ऑनलाइन आयोजित 14वीं राष्ट्रीय कॉन्क्लेव में बतौर मुख्य वक्ता बोल रहे थे। प्रो . मिश्रा ने छांदोग्य उपनिषद के सत्यकाम जाबाल, विदुर नीति, गार्गी एवम् मैत्रेयी के दार्शनिक संवादों के संग। संग सा विद्या या विमुक्तये की अवधारणा के जरिए भारतीय शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य को स्पष्ट किया। टीएमयू के कुलपति प्रो . वीके जैन ने वेब ऑफ साइंस एवम् स्कोपस सरीखी प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित शोधपत्रों, पुस्तकों, पेटेंट और अनुसंधान परियोजनाओं का उल्लेख करते हुए कहा, भारतीय ज्ञान परम्परा

रामराज्य की अवधारणा आज भी प्रासंगिक : प्रो. उपेन्द्र

टीएमयू में भारतीय ज्ञान परंपरा-आईकेएस केंद्र की 14वीं राष्ट्रीय कॉन्क्लेव में त्रेता युग की शिक्षा व्यवस्था पर मंथन

(अमर केसरी संवाददाता)

मुरादाबाद। तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी (टीएमयू) के भारतीय ज्ञान परंपरा-आईकेएस केंद्र के तत्वावधान में त्रेता युग: धर्माधारित शिक्षा एवं ऋषि आश्रमों का उदय विषय पर आयोजित ऑनलाइन 14वीं राष्ट्रीय कॉन्क्लेव में भारतीय ज्ञान परंपरा, गुरु-शिष्य परंपरा एवं त्रेता आधारित शिक्षा व्यवस्था पर विस्तार से चर्चा हुई।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के सेंटर फॉर वैदिक साइंस के विभागाध्यक्ष एवं संस्थापक-समन्वयक प्रो. ओम स्वरूप मिश्रा ने मुख्य वक्ता के रूप में त्रेता के वैदिक, उपनिषद, वेदांत, उपवेद, पुराण एवं महापुराण में वर्णित ज्ञान स्वरूप एवं भारतीय शिक्षा व्यवस्था का मूल आधार है।

पुष्कलावती जैसे प्राचीन शिक्षा केंद्रों, प्रश्नोपनिषद, शिक्षावल्ली, स्वाध्याय, श्रवण-मनन तथा गुरु-शिष्य परम्परा की महत्ता पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भगवान श्रीराम का आदर्श चरित्र, रामराज्य की अवधारणा और वैदिक शिक्षा के मूल्य आज भी समाज और शिक्षा व्यवस्था के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं।

प्रोफेसर डॉ शुभारंभ मां सरस्वती की वंदन के साथ हुआ। मुरादाबाद विश्वविद्यालय के कला संकाय-शिक्षा विभाग के प्रो. धर्मशील मिश्र ने विशिष्ट वक्ता के रूप में कहा [illegible]

की व्यवस्था नहीं है, बल्कि अनुशासन, सेवा, आत्मसंयम, समर्पण और लोक शांति के महान सिद्धांतों का जीवन्त स्रोत है। प्रो. विवेक ने छांदोग्य उपनिषद के सत्यकाम जाबाल, विदुर नीति, गार्गी एवं मैत्रेयी के दार्शनिक संदर्भों का उल्लेख करते हुए सा विद्या या विमुक्तये की अवधारणा को स्पष्ट किया। उन्होंने कहा कि व्यक्ति का वास्तविक मूल्य उसके ज्ञान, चरित्र और व्यवहार से निर्धारित होता है, न कि उसके पद और संपत्ति से।

टीएमयू के कुलपति प्रो. वीके जैन ने कहा कि वेदों और हमारी एवं [illegible]

में गहराई तक छिपी हुई, सुपरिणों, पेटेंट एवं अनुशासित परियोजनाओं के माध्यम से मानवीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शोध का समन्वय भविष्य की शिक्षा का आधार बनेगा।

टीएमयू के आईकेएस केंद्र की कोऑर्डिनेटर डॉ. अलका अग्रवाल ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि त्रेता युग की शिक्षा व्यवस्था केवल ज्ञान अर्जित करने तक सीमित नहीं बल्कि उसका उद्देश्य चरित्र निर्माण, आत्मानुशासन, कर्तव्यबोध और समाज सेवा मूल्यों का विकास करना था।

संचालन में डीन एकेडमिक्स प्रो. मंजुला जैन, लॉ कॉलेज के डीन प्रो. हरबंश दीक्षित, लॉ कॉलेज के प्राचार्य प्रो. सुशील कुमार सहित अनेक शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

पहचान के साथ राष्ट्रीय कॉन्क्लेव [illegible]

Dr. Patanjali Mishra, Professor, Department of Education, Faculty of Arts, University of Allahabad is also an alumnus of BHU. He is the Member of Expert committee of Dictionary Creation (English- Hindi) by Commission of Scientific and Technical terminology.

Milestones to be Covered in Next 6 Months, 01/07/2026 to 30/06/2027			
S.No	Tentative Activity	Proposed Activity	Theme
1	18/07/2026	Conclave (Online)	Dwapar Yug: Institutionalizing Knowledge and Royal Academics
2	10/08/2026 & 11/08/2026	Orientation (Offline)	Guidance will be given regarding the Course (IKS)
3	22/08/2026	Conclave (Online)	Kaliyug Beginnings: Taxila, Nalanda and the Golden Age of Universities
4	19/09/2026	Conclave (Online)	Medieval Disruptions and Indigenous Pathshalas, Makhtab and Madarsa
5	28/09/2026	FDP (Offline)	Leadership and Management through IKS
6	17/10/2026	Conclave (Online)	Bhakti and Sant Parampara-Education Through Devotion and Vernaculars
7	31/10/2026	Expert Talk (Offline)	Preserving Bharat's Cultural and Intellectual Heritage
8	21/11/2026	Conclave (Online)	Colonial Encounter: Macaulay's Minute and the English Education System
9	30/11/2026	Debate (Offline)	Debate: "Ancient Wisdom vs Modern Technology"
10	19/12/2026	Conclave (Online)	Nationalist Response: Tagore, Gandhi, Rabindro and Alternative Models

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं समुद्रमाप: प्रविशन्ति यद्वत्।
तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे स शान्तिमाप्नोति न कामकामी।।

(Bhagavad Gita: Chapter 4, Verse 7)

"One who is not disturbed by the incessant flow of desires can alone achieve peace, and not the person who strives to satisfy such desires"

TEERTHANKER MAHAVEER UNIVERSITY
CENTRE FOR INDIAN KNOWLEDGE SYSTEM

Delhi Road, Moradabad, Website: www.tmu.ac.in